अध्याय - 7

वाक्य विचार

वाक्य – जिन पदों को एक साथ बोलकर वक्ता अपना विचार या भाव पूरी तरह व्यक्त करे, उसे वाक्य कहते हैं ।

वाक्य के अंग

वाक्य में पद, पदबंध और उपवाक्य आदि अंग रहते हैं ।

पद – वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है ।

पदबंध

वाक्य में एकाधिक पद परस्पर संबद्ध होकर एक इकाई के रूप में काम करते हैं । उन्हें 'पदबंध' कहते हैं । पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –

(i) संज्ञा पदबंध (ii) विशेषण पदबंध (iii) सर्वनाम पदबंध (iv) क्रिया पदबंध (v) क्रिया-विशेषण पदबंध ।

(i) **संज्ञा पदबंध** : संज्ञा पदबंध संज्ञा का काम करता है । यह तीन प्रकार से बनता है – कर्ता पदबंध, कर्म पदबंध, पूरक पदबंध ।

(क) कर्ता पदबंध : रुक रुक कर बोलनेवाला लड़का डर गया ।

लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

गोली से घायल उग्रवादी आदमी अस्पताल में मर गया ।

(ख) कर्म पदबंध : मैंने लाल घोड़ा देखा ।

मैंने लँगड़ाते हुए चलनेवाला लाल घोड़ा देखा ।

(ग) पूरक पदबंध : पूरक पदबंध दो प्रकार के होते हैं–

कर्तापूरक –पण्डित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे ।

कर्मपूरक– हम तुलसीदास को भक्तिकाल का महान सन्त मानते हैं ।

(ii) **विशेषण पदबंध** : विशेषण पदबंध संज्ञा की विशेषता बनाता है; जैसे–

उसने मुझे बहुत मीठे-मीठे फल खिलाये ।

शिशु का चाँद-सा प्यारा मुखड़ा सबको मोह लेता है ।

नालियों में बहता हुआ गंदा पानी खेत में घुस आया ।

यह मछली एक किलो भर है ।

सभा में सिर्फ चालीस-पचास आदमी थे ।

(iii) **सर्वनाम पदबंध** : सर्वनाम पदबंध सर्वनाम का काम करता है । ऐसे पदबंध में सर्वनाम पहले या बाद में आ सकता है; जैसे–

दैव का मारा वह बर्बाद हो गया ।

लोगों की नजर में गिरे हुए तुम अपने को कैसे संभाल पाओगे ?

जल्दी-जल्दी याद कर लेनेवाला वह अन्त में इनाम जीत लेगा ।

तुम सब कल जल्दी आ जाना ।

मुझ अभागे को कुछ दिन की मुहलत चाहिए ।

(iv) **क्रिया पदबंध** : क्रिया पदबंध क्रिया का काम करता है; जैसे–

मेरी माँ पुरी में रहते समय मन्दिर जाया करती थी । (कालसूचक)

हम बचपन में रोज दादी माँ से कहानियाँ सुना करते थे । (कालसूचक)

वह खा चुका होगा । (पक्षसूचक)

तुम्हें वहाँ शरबत पीना चाहिए था । (पक्षसूचक)

बूढ़ा ठीक से चल-फिर सकता है । (दो धातुओं का योग)

तुम मित्रों को उधार दोगे ? (समिश्र क्रिया)

चाय में ज्यादा चीनी डाल दो । (संयुक्त क्रिया)

मुठभेड़ में दो उग्रवादी मारे गये । (वाच्यसूचक)

वह खाना खा रहा होगा । (वृत्तिसूचक)

(v) **क्रियाविशेषण पदबंध** : यह क्रिया विशेषण का काम करता है । उसमें स्थान, समय, रीति, प्रयोजन, कारण आदि की सूचना मिलती है, जैसे–

बच्चा खुले मैदान में खेल रहा है । (स्थान)

ट्रेन पाँच बजकर पन्द्रह मिनट पर आएगी । (समय)

हमने बड़ी श्रद्धापूर्वक संत का स्वागत किया । (रीति)

मुझे नौकरी के लिए दुर्गम स्थान पर जाना पड़ा । (प्रयोजन)

उनके अलावा 'के नीचे' (संबंधबोधक पदबंध), 'इसलिए कि' (समुच्चयबोधक पदबंध) और 'हाय रे' (विस्मयादिबोधक पदबंध) भी होंगे ।

उपवाक्य

जब दो या दो से अधिक छोटे-छोटे वाक्य एक साथ आकर एक वाक्य बनाते हैं, तब प्रत्येक वाक्य को उपवाक्य कहा जाता है । प्रत्येक उपवाक्य में कर्ता और क्रिया का होना आवश्यक है । उपवाक्य के तीन भेद हैं – (i) समानाधिकरण (ii) प्रधान (iii) आश्रित ।

(i) **समानाधिकरण उपवाक्य** : जब वाक्य में प्रत्येक उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं, समान महत्व रखते हैं, तब वे समानाधिकरण उपवाक्य कहलाते हैं , जैसे–

रजनी गाती है और नाचती है ।

यहाँ 'रजनी नाचती है' समानाधिकरण उपवाक्य है ।

(ii) **प्रधान उपवाक्य** : वाक्य में जिस उपवाक्य का मुख्य स्थान होता है और क्रिया स्वतंत्र होती है, उसे प्रधान या मुख्य उपवाक्य कहते है; जैसे–

उसने कहा कि मैं कटक जाऊँगा ।

यहाँ 'उसने कहा' प्रधान उपवाक्य है ।

(iii) **आश्रित उपवाक्य** : आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है, जैसे–

जो मेहनत करता है, उसे उसका फल मिलता है ।

यहाँ 'जो मेहनत करता है' आश्रित उपवाक्य है ।

ये तीन प्रकार के होते हैं–

(क) **संज्ञा उपवाक्य**– इसका प्रयोग प्रधान उपवाक्य की संज्ञा (कर्म पूरक आदि) के स्थान पर होता है; जैसे–

शिक्षक ने कहा कि मैं तुम्हें एक नया पाठ पढ़ाऊँगा ।

(यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'कहा' का कर्म है-कि मैं तुम्हें एक नया पाठ पढ़ाऊँगा । अत: वह संज्ञा उपवाक्य है ।

तुम मुझे यह बताओ कि कक्षा में हल्ला क्यों हुआ ?

(यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'बताओ' के कर्म 'यह' का पूरक है-कि कक्षा में हल्ला क्यों हुआ ? अत: वह संज्ञा उपवाक्य है ।

(ख) **विशेषण उपवाक्य** – यह प्रधान उपवाक्य की संज्ञा की विशेषता बताता है; जैसे –

वह लड़का कहाँ है, जो कक्षा में प्रथम आया है ?

यहाँ प्रधान उपवाक्य की संज्ञा 'लड़का' की विशेषता बताता है– जो कक्षा में प्रथम आया है । अत: यह विशेषण उपवाक्य है ।

विशेषण उपवाक्य जो, जिसे, जिसमें आदि से शुरू होता है ।

(ग) **क्रियाविशेषण उपवाक्य** – यह प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है; जैसे–

तुम वैसा ही करो, जैसा आदेश दिया जाता है ।

यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'करो' की विशेषता (रीति) बताता है । 'जैसा आदेश दिया गया है' । यह क्रियाविशेषण उपवाक्य है ।

क्रियाविशेषण उपवाक्य निम्नलिखित प्रकार के हैं –

(i) **कालवाचक** : उसका आरंभ जब, जब-जब, ज्योंही से होता है; जैसे –

जब घण्टी बजी, तब सभी छात्र कक्षा से बाहर आए ।

जब-जब तुम दोनों मिले, तब-तब झगड़ते रहे ।

ज्यों ही घण्टी बजी, त्यों हीं लड़के बाहर चले आए ।

(ii) **स्थानवाचक** : इसका आरंभ जहाँ, जिधर से होता है; जैसे –

जहाँ तुम आज खड़े हो, वहाँ कीचड़ भरी हुई थी ।

मैं जिधर जाता हूँ, तुम भी उधर जाते हो ।

(iii) **रीतिवाचक** : इसका आरंभ जैसे, जिस प्रकार, मानो से होता है; जैसे–

जैसे ही सिखाया गया था, लड़कियाँ वैसे ही नाचने लगीं ।

वह ऐसा गाती है मानो कोयल कूक रही हो।

(iv) **परिमाणवाचक** : इसका आरंभ ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे, जितना, जहाँ तक से होता है–

मनुष्य की ज्यों-ज्यों कामना बढ़ती है, वह त्यों-त्यों दु:खी रहता है ।

जितना गुड़ डालोगे, लड्डू उतना मीठा होगा ।

जहाँ तक संभव है, हजारों की मदद करते रहे ।

(v) **कारणवाचक** : इसका आरंभ क्योंकि, अगर, ताकि, यद्यपि, चाहे से होता है, उपवाक्य से कारण, शर्त या उद्देश्य का भाव प्रकट होता है; जैसे –

मैं वहाँ जाऊँगा क्योंकि मुझे आमंत्रित किया गया है ।

अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो परिणाम अच्छा नहीं होगा ।

पहले आरक्षण करा लो ताकि रेलयात्रा सहुलियत होगी ।

यद्यपि वह धनवान है, फिर भी कंजूस है ।

तुम चाहे मुझे नुकसान पहुँचाओ, पर मैं सच ही बोलूँगा ।

वाक्य के अवयव

वाक्य के दो अवयव होते हैं – (i) उद्देश्य, (ii) विधेय । जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कोई बात कही जाती है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं । उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं ।

उद्देश्य का मुख्य अंश कर्ता है । कर्ता के विस्तार को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं । उसी प्रकार कर्म, कर्म के विस्तार, पूरक, पूरक के विस्तार और क्रिया के विस्तार से विधेय का विस्तार होता है ।

उद्देश्य (कर्ता) की रचना निम्न प्रकार से होती है –

संज्ञा से – पत्ता गिरा । कौआ बोला ।

सर्वनाम से – वह आया । तुम पढ़ो ।

विशेषण से – अमीरों ने दान दिया ।

क्रियार्थक संज्ञा से – सच बोलना एक महान गुण है ।

अव्यय से – तुम्हारी हाँ-नहीं, हाँ-नहीं हमें दुबिधा में डाल देती है ।

कर्ता का विस्तार चार प्रकार से होता है ।

विशेषण से – लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

संबंधबोधक शब्द से – कश्मीर का लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

समानाधिकरण से – दशरथ नन्दन श्रीराम आदर्श राजा थे ।

पदबंध से – कड़ी मेहनत करनेवाले मजदूर देश के विकास में सहायक होंगे ।

विधेय की रचना निम्न प्रकार से होती है –

क्रिया से – गाड़ी आयी ।

कर्म और क्रिया से – उसने फल खाया ।

कर्म, कर्म पूरक और क्रिया से – मैं उसे ईमानदार समझता हूँ ।

कर्म-विस्तार, कर्म, क्रिया-विस्तार और क्रिया से – तुम बासी रोटी वहाँ चुपके से फेंक दो ।

विधेय का विस्तार निम्न प्रकार से होता है –

क्रिया और उसके विस्तार से – गाड़ी तेज चलती है ।

कर्म और उसके विस्तार से – उसने ताजा रोटी मजे से खाई ।

पूरक और उसके विस्तार से – उसने लंगड़े रामू को पक्का चोर समझ लिया ।

रचना की दृष्टि से वाक्य

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं –

(i) **साधारण या सरल वाक्य** (ii) **मिश्र वाक्य** (iii) **संयुक्त वाक्य**

(i) **साधारण / सरल वाक्य** : इसमें केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, जैसे– मोहन पाठ पढ़ता है ।

(ii) **मिश्र वाक्य** : इसमें एक मुख्य उपवाक्य होता है और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं । मिश्र वाक्य के आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं ।

(क) *संज्ञा उपवाक्य* – जैसे – मैं चाहता हूँ कि गर्मियों में तुम हमारे घर पर रहो ।

(ख) *विशेषण उपवाक्य* – जैसे – वह लड़का भाग गया जिसने चोरी की थी ।

(ग) *क्रियाविशेषण उपवाक्य* – जैसे – मैं तब पहुँचा जब बारिश हो रही थी ।

(iii) **संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों उसे संयुक्त उपवाक्य कहते हैं ।

(क) उसमें दो सरल वाक्य हो सकते हैं – जैसे – तुम यहाँ से जाओ और सोहन को बुलाकर लाओ ।

(ख) एक सरल तथा एक मिश्र वाक्य हो सकते हैं, जैसे – मेरा यह विचार है कि यदि वर्षा नहीं होगी तो फसल नष्ट हो जाएगी ।

(ग) दो मिश्र वाक्य हो सकते हैं, जैसे – जब तुम पहुँचे तब सब आ रहे थे और जब तुम खाने बैठे, तब बस चली गयी।

वाक्य परिवर्तन

सरल वाक्य – मैंने एक बहुत लंबा साँप देखा ।

मिश्र वाक्य – मैंने एक साँप देखा जो बहुत लंबा था ।

सरल वाक्य – सुबह-शाम कसरत करनेवाला आदमी इनाम जीत गया ।

मिश्र वाक्य – जो आदमी सुबह-शाम कसरत करता था, वह इनाम जीत गया ।

सरल वाक्य – शिशु दूध पीकर सो गया ।

संयुक्त वाक्य – शिशु ने दूध पिया और सो गया ।

सरल वाक्य – कड़ी मेहनत करने पर भी किसान गरीब रहता है ।

संयुक्त वाक्य – किसान कड़ी मेहनत करता है, फिर भी वह गरीब रहता है ।

सरल वाक्य – मैं शरीर पर नित्य तेल मलकर नहाता हूँ ।

संयुक्त वाक्य – मैं शरीर पर नित्य तेल मलता हूँ और नहाता हूँ ।

संयुक्त वाक्य – आगे बढ़ो और दुश्मनों का मुकावला करो ।

सरल वाक्य – आगे बढ़कर दुश्मनों का मुकावला करो ।

मिश्र वाक्य – जो छात्र कठिन परिश्रम करते हैं, वे सफल होते हैं ।

सरल वाक्य – कठिन परिश्रम करने वाले छात्र सफल होते हैं ।

मिश्र वाक्य – उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ ।

सरल वाक्य – उसने अपने को निर्दोष बताया ।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्न भेद हो सकते है :

(1) **विधानात्मक** : जिस वाक्य से क्रिया या कार्य के होने का भाव प्रकट हो, जैसे–

बच्चे हिन्दी पढ़ते हैं । वे एक अध्यापक हैं ।

(2) **निषेधवाचक** : जिस वाक्य की क्रिया में न होने का भाव हो, जैसे–

राजू ने खाना नहीं खाया । आप ज्यादा न बोलें ।

वहाँ न तुम जाओ, न वह जाए । तुम देर मत करो ।

(3) **आज्ञावाचक** : जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश, अनुरोध, परामर्श या उपदेश आदि का बोध होता हो, जैसे–

तुम अपना काम करो । तुम सुबह जल्दी उठा करो । यह गरीबों की मदद करें ।

(4) **प्रश्नवाचक** : जिस वाक्य से प्रश्न पूछने का बोध हो; जैसे–

क्या आप बाजार जाना चाहते हैं ? शेर कहाँ रहता है ? वह लड़का कब लौटेगा ?

(5) **इच्छावाचक** : जिस वाक्य से इच्छा, कामना, सुझाव, आशिष आदि का बोध हो; जैसे – भगवान तुम्हारा मंगल करें । तुम्हारी उन्नति हो ।

(6) **विस्मयबोधक** : जिस वाक्य से विस्मय, हर्ष, सुख-दुःख आदि भाव अभिव्यक्त हों; जैसे – तुमने इतना बड़ा वजन उठा लिया ! हाय, वह कितना कष्ट झेलता है ! शाबाश ! तुमने बड़ा अच्छा काम किया !

(7) **सन्देहवाचक** : जिस वाक्य से सन्देह या संभावना का बोध हो; जैसे–

क्या वह अब तक पहुँच गया होगा ? शायद आज बारिश होगी ।

(8) **संकेतवाचक** : जिस वाक्य में कोई शर्त (संकेत) पूरी होने की बात कही गई हो; जैसे–

वर्षा होती तो अन्न उपजता । तुम पढ़ोगे तो पास होगे ।

अभ्यास

1. वाक्य की परिभाषा देकर एक उदाहरण लिखिए ।

2. पदबंध कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का एक एक उदाहरण दीजिए ।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से आश्रित उपवाक्यों को छाँटकर लिखिए और बताइए कि वे किस प्रकार के उपवाक्य हैं–

(i) उसने कहा कि मैं स्कूल नहीं जाऊँगा ।

(ii) वह स्कूल नहीं गया क्योंकि वह बीमार था ।

(iii) जब विपत्ति आ जाए, तब घबराना नहीं ।

(iv) मोहन कहता है कि मैं गलत काम नहीं कर सकता ।

(v) जो लड़का परीक्षा में प्रथम आया, उसे पुरस्कार मिलेगा ।

4. इन वाक्यों को जोड़िए :

(i) दीदी ने भींडी काटी । माँ ने सब्जी बनाई ।

(ii) मुझे एक मकान मिला था । वह रहने लायक नहीं था ।

(iii) यहाँ काफी वर्षा होती है । इस साल कम वर्षा हुई है ।

(iv) मेरे पास पैसे नहीं थे । मैं मेले में नहीं गया ।

(v) उसकी ममी की तबीयत ठीक नहीं थी । वह विद्यालय नहीं गई ।

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :–

उदाहरण – वह झूठ बोला था, वह उसकी मजबूरी थी ।

वह झूठ बोला था, क्योंकि यह उसकी मजबूरी थी ।

(i) हम खेल नहीं सके । बारिश हुई ।

(ii) उसने नौकरी छोड़ दी । उसे कम पैसे मिलते थे ।

(iii) मालिक ने नौकर को निकाल दिया । उसने चोरी की थी ।

(iv) वह जल्दी सो गया । रोशनी चली गई थी ।

(v) मैं वहाँ खाना खाने नहीं गई । वहाँ मछली पकाई गई थी ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्यों– विधेयों को अलग- अलग लिखिए :

(i) मैं घर जा रहा हूँ ।

(ii) राशन लेने आए लोग बहुत देर तक खड़े रहे ।

(iii) तुम हिन्दी जानते हो ?

(iv) मेहनत करने वाले लोग कभी दु:खी नहीं होते ।

(v) छोटा पौधा धूप में मुरझा गया ।

7. निम्नलिखित वाक्य अर्थ की दृष्टि से किस प्रकार के वाक्य हैं, बताइए :–

(i) भुवनेश्वर भारत की राजधानी है ।

(ii) इस समय किसान खेत में नहीं होगा ।

(iii) आप यह पुस्तक पढ़ें ।

(iv) किसने गीत गाया ?

(v) मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा दूसरों की सहायता करते रहो ।

●